जैन समाज को कुरीतियों ने जकड़ लिया।

जन्म कुंडली के मिलान और नौकर दामाद खोजने में उलझा जैन समाज। परिवार के सभी रिश्तों और समाज निर्माण के लिए कम से कम तीन बच्चे होते हैं अच्छे

विशाल जैन पवा(तालबेहट) । वैश्विक महामारी 'कोरोना' ने हर समाज में भारी तबाही मचायी है, इससे यह संदेश स्पष्ट है कि परिवार में बिखराव नहीं एकजुटता और सामंजस्य होना चाहिए, इस आपदा ने जैन समाज को जीवन शैली परिवर्तित करने की सीख दी है। जैन समाज को अब अपनी सामाजिक वैवाहिक परम्पराओं में थोड़ा परिवर्तन लाना होगा । समाज शिक्षित होते हुये भी कुंडली के फेर में पड़ा है और अपने बच्चों के विवाह हेतु कुंडली मिलान के चक्कर में उन्हें अधेड बना रहा है, जैसे-जैसे परिवार सम्पन्न होता जा रहा है अंधविश्वास के मकड़जाल में फंसता जा रहा है। ऐसे लोगों से पूछा जाये कि क्या सभी के माता-पिता ने बच्चों के विवाह मे कुंडली मिलाई थी, क्या उनका वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं चल रहा? क्या गुण व कुंडली मिलाने के बाद भी तलाक के आंकडे नहीं बढ़ रहे ? फिर ऐसे कुंडली मिलान से क्या लाभ ? आधुनिक कहा जाने वाला जैन समाज इतना अंध विश्वासी क्यों जाता रहा है? आज गृहस्थी की नींव भी कमजोर पड़ रही है, हर दिन किसी न किसी का घर टूट रहा है, परिवार बिखर रहा है या कशमकश की स्थिति और तनाव बेशुमार है, इसके कारण और जड़ (समस्या) को अनदेखा किया जा रहा है, अनावश्यक दखलअंदाजी, संस्कार विहीन शिक्षा, आपसी तालमेल का अभाव, न सुनने की आदत, सहनशक्ति की कमी, आधुनिकता का आडम्बर, समाज का भय नहीं, झूठे ज्ञान का घमंड, अपनों से अधिक गैरों की राय, घंटो मोबाइल पर चिपके रहना, अहंकार के वशीभूत होना और अपनी खुशियां केवल धन-दौलत मे खोजना। पहले भी तो परिवार होता था और वह भी बडा, लेकिन वर्षों आपस में निभती थी। भय भी था, प्रेम भी था और रिश्तों की मर्यादित जवाबदेही भी। पहले माँ बाप ये कहते थे कि मेरी बेटी गृह कार्य में दक्ष है, और अब कहते है मेरी बेटी नाजों से पली है आज तक हमनें इससे तिनका भी नहीं उठवाया है, तो फिर क्या करेगी शादी के बाद ? शिक्षा की होड़ में आदर सत्कार और परिवार चलाने के संस्कार नहीं दे पा रहे है । माँ खुद की रसोई से ज्यादा बेटी के घर में क्या बना इस पर ध्यान देती है, ऐसा कर वह दो घर खराब करती हैं। मोबाईल तो है ही रात दिन बात करने के लिए, परिवार के लिए किसी के पास समय नहीं है ।

बुजुर्गों को तो बोझ समझते हैं, पूरा परिवार साथ बैठकर भोजन तक नहीं कर सकता। बड़े घरों का हाल तो और भी खराब है । सबसे ज्यादा बदलाव तो महिलाओं में आया है, दिनभर मनोरंजन, मोबाईल, समय बचे तो बाजार और ब्यूटी पार्लर, भोजन बनाने या परिवार के लिये समय नहीं। घर के शुद्ध खाने में पौष्टिकता तो है ही प्रेम भी है, लेकिन ये सब पिछडापन हो गया है, आधुनिकता तो होटलबाजी में है। पहले शादी ब्याह में महिलाएं गृहकार्य में हाथ बंटाने जाती थी और अब नृत्य सीखकर। क्योंकि महिला संगीत मे अपनी प्रतिभा जो दिखानी है। जिस की घर के काम में तबियत खराब रहती है वो भी घंटों नाच सकती हैं। घूँघट और साड़ी हटना तो ठीक है लेकिन बदन दिखाऊ कपडे, यह कैसी आधुनिकता है? बरमाला में पूरी फूहड़ता, कोई लड़के को उठा रहा है, कोई लड़की को उठा रहा है यह सब क्या है? कहां गये वह मान मर्यादा के साथ सम्पन्न किये जाने वाले विवाह संस्कार । पहले स्त्री को छोडो पुरुष भी कोर्ट कचहरी से घबराते थे और शर्म भी करते थे अब तो फैशन हो गया है, पढे लिखे युवा तलाकनामा तो जेब मे लेकर घूमते हैं। पहले समाज के चार लोगों की राय मानी जाती थी और अब माँ-बाप तक को नहीं समझते। सबसे खतरनाक है जुबान और भाषा जिस पर अब कोई नियंत्रण नही रखना चाहता है।

कभी-कभी न चाहते हुए भी चुप रहकर घर को बिगड़ने से बचाया जा सकता है लेकिन चुप रहना कमजोरी समझा जाता है, आखिर शिक्षित है, और हम किसी से कम नहीं वाली सोच जो विरासत में मिली है, गोली से बड़ा घाव बोली का होता है। आज समाज सरकार व सभी चैनल केवल महिलाओं के हित की बात करते हैं। पुरुष जैसे अत्याचारी और नरभक्षी हों। एक अच्छा पति भी तो पुरुष ही है जो खुद सुबह से शाम तक दौड़ता है, परिवार की खुशहाली के लिये। खुद के पास भले ही पहनने के कपड़े न हों, घरवाली के लिये हार के सपने देखता है, बच्चों को महँगी शिक्षा देता है। संबंध जोड़ने को पहले लड़की के लिए संस्कारी लड़का, सामाजिक पकड़ रखने वाला परिवार और खानदान देखते थे और अब? सिर्फ नौकरी करने वाले बच्चों की बात की जाती है । मन की नहीं, तन की सुन्दरता, दौलत, कार, बंगला। लड़के वालो को लड़की बड़े घर की चाहिए जिससे भरपूर दहेज मिल सके और लड़की वालों को दौलतमंद लड़का ताकि बेटी को काम करना न पडे। परिवार छोटा ही हो और इस छोटे के चक्कर मे परिवार कुछ ज्यादा ही छोटा हो गया है। आज परिवार का मतलब सिर्फ पति-पत्नी और बच्चे नहीं बस एक बच्चा, आखिर क्या होगा ? परिवार के सभी रिश्तों को जीवंत रखने और समाज निर्माण के लिए कम से कम तीन बच्चे होते हैं अच्छे। समाज में यह बहुत बड़ी कुरीति है कि लड़का चाहे 40 हजार रुपये महीने ही कमाता हो लेकिन नौकरी वाला लड़का चाहिए, व्यापारी लड़का भले ही दो लाख महीने कमाता हो और अनेक लोगों को नौकरी देने वाला हो लेकिन अभिभावक की पहली पसंद नौकरी वाले लड़कों की ही होती है, जबकि अच्छे व्यापार करने वाले परिवारों की अनेक पीढ़ियां आर्थिक व सामाजिक रुप से सुरक्षित रहती है। संयुक्त और बड़ा परिवार सदैव अच्छा होता है, आज भौतिकतावादी युग में अनेक समस्याएँ और परेशानी होती हैं जिसमें साथ देने वाला कोई हो तो तनाव कुछ तो कम होगा। नौकर दामाद तलाश का कारण केवल यह है कि नौकरी वाला दूर परिवार से अलग रहेगा, नौकरी के नाम पर आजादी मिलेगी, काम का बोझ भी कम होगा। विवाह योग्य प्रत्याशियों के लिए आये दिन बायोडाटा ग्रुप खुल रहे हैं, उम्र मात्र 30 से 40 साल, एजुकेशन भी ऐसी, कि क्या कहना? कई डिग्री धारक रोज सैकड़ो लड़के और लड़कियों के बायोडाटा आ रहे हैं लेकिन रिश्ते नहीं हो रहे हैं, इसका कारण एक ही है इन्हें रिश्ता नहीं बेहतर की तलाश है। रिश्तों का बाजार सजा है गाड़ियों की तरह, शायद और कोई नयी गाड़ी लांच हो जाये। इसी चक्कर मे उम्र बढ़ रही है, अब इनको कौन समझाये कि एक उम्र में जो चेहरे में चमक होती है वो अधेड होने पर कायम नहीं रहती, भले ही ब्यूटी पार्लर में जाकर लाख रंगरोगन करवा लो ।

एक चीज और संक्रमण की तरह फैल रही है नौकरी वाले लडके को नौकरी वाली ही लड़की चाहिये खुद पर विश्वास ही नहीं कि वह अपनी पत्नि को खिला सकता है। अब जब वो खुद ही कमायेगी तो क्यों तुम्हारी या तुम्हारे माँ-बाप की इज्जत करेगी? बस यही सब कारण है आजकल अधिकांश परिवारों में तनाव है, एक दूसरे पर अधिकार तो बिल्कुल ही नही रहा। और सहनशीलता तो बिल्कुल भी नहीं इसका अंत दु:खद ही होता है । घर परिवार झुकने से चलता है, अकड़ने से नहीं। जीवन मे जीने के लिये रोटी कपड़ा और मकान की जरूरत है और उसमें सबसे ज्यादा जरुरी है आपसी तालमेल और प्यार। नौकरी पसंद वालों को इतना ही कहूँगा कि अगर धीरुभाई अंबानी भी नौकरी पसंद करता तो आज लाखों नौकर उसके अधीन नही होते। विवाह की बढ़ती उम्र पर समाज खामोश क्यों है? कुंवारे बैठे लड़के-लड़कियों की एक गंभीर समस्या आज सामान्य रुप से सभी समाजों में उभर के सामने आ रही है। इससे स्पष्ट है कि इस समस्या का उम्र ही एकमात्र कारण नहीं बचा है। ऐसे में लड़के लड़कियों के जवान होते सपनों पर न तो समाज की नजर है और न ही किसी रिश्तेदार और सगे संबंधियों की। बेशक यह सच किसी को कड़वा लग सकता है लेकिन जैन समाज की हकीकत यही है, 25 वर्ष के बाद लड़कियां ससुराल के माहौल में ढल नहीं पाती हैं, क्योंकि उनकी आदतें पक्की और मजबूत हो जाती हैं अब उन्हें मोडा या झुकाया नहीं जा सकता जिस कारण घर में बहस, वाद विवाद, तलाक होता हैं। शादी के लिए लड़की की उम्र 18 साल व लड़के की उम्र 21 साल होनी चाहिए ये तो अब बस आंकड़ों में ही रह गया है। एक समय था जब संयुक्त परिवार के चलते सभी परिजन अपने ही किसी रिश्तेदार व परिचितों से शादी संबंध बालिग होते ही करा देते थे। मगर बढ़ते एकल परिवारों ने इस परेशानी को और गंभीर बना दिया है। उच्च शिक्षा और हाई प्रोफाइल जॉब बढ़ती उम्र का प्रमुख कारण है, इसके बाद 2-3 साल तक जॉब करते रहने या बिजनेस करते रहने पर उसके संबंध की बात आती है। 30 वर्ष तक रिश्ता हो गया तो ठीक, नहीं तो लोगों की नजर तक बदल जाती है, लड़का-लड़की ही नहीं उसके माता-पिता, भाई-बहन, घर-परिवार और सगे संबंधी भी चिंतित होते हैं। आखिर कहां जाए युवा मन, अपने मन को समझाते-बुझाते युवा आखिर कब तक भाग्य भरोसे रहेगा। अपनों से तिरस्कृत और मन से परेशान युवा सब कुछ होते हुए भी अपने को ठगा सा महसूस करता है। हर लड़की और उसके पिता की ख्वाहिश से आप और हम अच्छी तरह परिचित हैं। पुत्री का बनने वाला जीवनसाथी पहले तो नौकर हो, खुद का घर हो, कार हो, परिवार की जिम्मेदारी न हो, घूमने-फिरने और आज से युग के हिसाब से शौक रखता हो और कमाई इतनी तगड़ी हो कि सारे सपने पूरे हो जाएं, तो ही बात बन सकती है। लेकिन हर लड़की वाला यह नहीं सोचता कि क्या उसका लड़का किसी और के लिए यह सब पूरा करने में सक्षम है? आज माता-पिता पूछते हैं लडके के लिए कोई अच्छी लडकी बताओ, और लडकी के लिए कहते हैं कोई अच्छा नौकरी वाला लडका बताओ, जब आपको नौकरी वाला दामाद चाहिए तो आपके लडके को कौन अपना दामाद बनाएगा, एक ही पहलू पर अलग-अलग सोच समाज की सबसे बडी बिडम्बना है।

बेटी को विवाह पूर्व नौकरी कराना अधिकांश माता-पिता के लिये अब शायद मुसीबत का सबब बनता जा रहा है। आज अधिकांश माता-पिता अपनी पुत्रियों को विवाह पूर्व नौकरी करवाकर अपने लिये एक समस्या तैयार कर रहे हैं और उन्हें उनके विवाह मे जो समस्याएं आती है उसका हल निकालना उनके लिये अब दुष्कर होता जा रहा है। आत्मनिर्भर हो जाने के बाद संस्कारों के अभाव में अधिकांश पुत्रियाँ माँ-बाप की बात नही मानती। नौकरियो मे उनका वेतन अधिक होने से उनसे कम वेतन वाले सदाचारी लडके उन्हें पसन्द नही आते। अन्य शहर मे नौकरी करने के कारण उनके विजातीय लडको से रिलेशिनशिप की संभावना से इन्कार नही किया जा सकता है । एक बार नौकरी मिल जाने पर उसे छोडने को तैयार नही होती, जिससे जिस शहर मे नौकरी करती है उस शहर में ही कार्यरत लडकी से अधिक पैकेज वाला आपके शहर का रहने वाला सजातीय वर चाहिये जो कि माता-पिता के लिये जटिल कार्य है। ऐसे वर की तलाश मे उनकी विवाह की उम्र निकल जाती है। ऐसा वर ढूँढना उन के लिये क्या, किसी के लिये भी मुश्किल कार्य है। बच्चों के माता पिताओं से निवेदन है कि कुछ वर्ष नौकरी करने के पश्चात विवाह बंधन में बांधने का प्रयास करना ही चाहिए ताकि वे समय रहते अपने परिवार को आगे बढ़ाये, वैवाहिक संबंध बनाने में कुछ समझौते यदि भविष्य संवारने के लिए किये जा सकते है तो करें । भविष्य में आप अपने निर्णयों पर निश्चित ही गर्व करेंगे कि उस समय लिया आपका निर्णय हमारे परिवार के लिए उचित रहा । हर किसी को हर चीज अपनी पसंद की नहीं मिलती यह सच हम जितना जल्दी मांग लेंगे उतना ही अपने आप को भाग्यशाली और संतुष्ट कर पायेंगे ।

UNIT OF JARIWALA GROUP

NOW ONLINE AVAILABLE :
- 92.5 Silver Jewellery
- Certified Gems Stone
- Certified Real Diamond Jewellery
- Certified Rudraksha

SONARI™ CREATIONS

Follow us : www.sonaricreations.com

Dr. Arohi Jain
Dr. Antra Jain
Abhiraj Jain
Adiraj Jain

Jariwala Market, Lakherwadi, UJJAIN (M.P.) 456006
Cell : 9522222751, 6261965047
Email : thesonaricreations@gmail.com